

Fourteenth Loksabha

Session : 7

Date : 19-05-2006

Participants : Yadav Shri Devendra Prasad

Title : Situation arising out of alleged provocative remarks in a book 'History of Bhartiya Jansangh Party Document Vol. –VI' written by S/Shri Jagdish Prasad Mathur and Makkhan Lal.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : महोदय, मैं अत्यंत संवेदनशील एवं लोकहित विषय की ओर आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। टीवी मीडिया के एक चैनल सात पर यह दिखाया गया है कि एक आपत्तिजनक किताब छपने जा रही है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : छपने जा रही है, अभी छपी तो नहीं है।

...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, छप रही है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : लेकिन आप तो कह रहे हैं कि छपने जा रही है।

...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि पूरी तरह छपी नहीं है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई चीज़ सम्भावनाओं पर नहीं होती है।

...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, इसका एक से पांच वाल्यूम छप चुका है, मेरे पास इसकी कॉपी है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप डॉक्यूमेंट मत दिखाइए। यदि छप गयी हो तो आप अपनी बात कह सकते हैं।

...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, यह छप चुकी है और यह इसकी कापी है। हम इसको दिखा सकते हैं और ले कर सकते हैं।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : न दिखा सकते हैं और न ही ले कर सकते हैं।

...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, यह पुस्तक श्री जे.पी. माथुर और श्री माखन लाल के द्वारा लिखित एवं सम्पादित [cè\[c21\]](#)। किताब की कापी मेरे पास यहां मौजूद है। किताब का नाम है, "History of Bharatiya Jansangh Party Document Volume VI". मैं इसलिए इसका उल्लेख कर रहा हूँ कि जिन तथ्यों का इसमें उल्लेख किया गया है, उससे न केवल साम्प्रदायिक भावनाओं को उभारा जा रहा है, बल्कि खुल्लमखुल्ला इससे साम्प्रदायिक भावना को उभारने का काम और एक खास समुदाय पर घोर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है। यहां तक कि साम्प्रदायिक आफिशियल डॉक्यूमेंट्स से इस देश के धर्मनिरपेक्ष सिद्धान्त और जो धर्मनिरपेक्ष संविधान है, जो हमारे देश का धर्मनिरपेक्ष ताना-बाना है, वह भी खतरे में पड़ा हुआ है, इसलिए अब हमारा निवेदन यह है...(व्यवधान)

सभापति महोदय : किताब की समीक्षा अखबार में छपती है।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मेरा निवेदन यह है कि देश के संवैधानिक...(व्यवधान)

सभापति महोदय : इतना काफी है।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : तोड़ने की परिस्थिति इस किताब से पैदा हो गई है, इसलिए इस गैरकानूनी असंवैधानिक किताब की छपाई पर अब जो वोल्यूम छप गया है, इसको प्रतिबन्धित किया जाये, ताकि यह किताब प्रकाशित, प्रचारित, प्रसारित न हो सके। केन्द्र सरकार संवैधानिक शक्ति प्राप्त है ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : गृह मंत्री जी ने आपकी बात सुन ली है।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : साम्प्रदायिकता बढ़ाने वाली इस तरह की पुस्तक का मैं इसीलिए निवेदन कर रहा हूँ और जो साम्प्रदायिक आफिशियल डाक्यूमेंट्स इस तरह से छाप रहे हैं, ऐसे दल को भी बैन किया जाये...(व्यवधान) बैन किया जा सकता है, प्रतिबन्धित किया जा सकता है और मुकदमा चलाया जा सकता है। देश के अन्दर साम्प्रदायिकता को उभारने की किसी को इजाजत नहीं है। जो हमारा सैकुलर संविधान है...(व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आपका समय समाप्त हो गया, समाप्त करिये। आपका समय समाप्त हुआ।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं सिर्फ एक उल्लेख करना चाहता हूँ, इस डाक्यूमेंट से एक लाइन कोट करना चाहता हूँ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप उस किताब का स्वतः प्रचार कर रहे हैं। आपकी बात हो गई।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं एक लाइन कोट करना चाहता हूँ। 30 सितम्बर, 1923 को जब पूरे देश में आजादी का संग्राम चल रहा था, “It would concentrate on organising the Hindu society.”

सभापति महोदय : आप डिटेल्स नहीं पढ़ सकते, आपका हो गया।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : उस समय में हेगडेवार हिन्दू संगठन आर्गेनाइज़ कर रहे थे, उस समय आर.एस.एस. का गठन किया जा रहा था।

सभापति महोदय : हेगडेवार कुछ नहीं था, आपका हो गया।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : शाखा लगाने का काम हो रहा था। देश की आजादी से इन लोगों का क्या लेना-देना है। मैं इसीलिए कहना चाहता हूँ कि इसको तुरन्त प्रतिबंधित करना चाहिए।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपका हो गया। श्री बची सिंह रावत। सूचना ग्रहण हो गई।

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आगे आपका रिकार्ड नहीं हो रहा है, बोलने से क्या फायदा।

...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप खुद उस पुस्तक का अनावश्यक प्रचार क्यों कर रहे हैं?

श्री खारबेल स्वाई (बालासोर) : आपने जो उपदेश दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद।